पाठ 12. मीठे बोल

पाठ का परिचय

एक दिन रामधन गड़रिये का लड़का चंदर भेड़ चराने घाटी में गया। वहाँ वह गाने लगा। पहाड़ी से टकराकर उसके गाने की आवाज़ वापस आई। उसे लगा कि कोई लड़का उसकी नकल कर रहा है। उसने गुस्से से अपशब्द बोलना शुरू किया। पहाड़ी से टकराकर वही अपशब्द वापस लौटे। वह बेचारा बहुत भोला था। उसे विश्वास हो गया कि कोई लड़का ज़रूर है। वह रोता हुआ घर वापस आया। उसने अपने दादा जी से कहा कि अब वह भेड़ चराने नहीं जाएगा और उसने सारी बात बता दी। उसके दादा जी ने उसे बताया कि जो कुछ तुम कहते हो उसकी गूँज पहाड़ी में उठती है। तुम जैसा दूसरों से बोलोगे वैसा ही लोग तुमसे बोलेंगे।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

मीठे वचन बोलो। कभी भी अपशब्दों का प्रयोग न करो। तुम दूसरों के साथ जैसा व्यवहार करोगे लोग वैसा ही व्यवहार तुमसे करेंगे। दूसरों से मीठा बोलोगे तो सभी तुम्हारा दोस्त बनना चाहेंगे।

पाठ का वाचन

कहानी का मौन वाचन करवाएँ। कहानी से संबंधित कुछ प्रश्न बच्चों से पूछें। आवश्यकता पड़ने पर स्वयं कहानी का वाचन शुद्ध उच्चारणसहित करें। कठिन शब्दों को रेखांकित अवश्य करवाएँ। अपने वाचन के दौरान बीच-बीच में रुककर पंक्तियों का स्पष्टीकरण भी करें। अंत में बच्चों से भी अनुकरण वाचन करवाएँ। बच्चों के द्वारा किए गए अशुद्ध उच्चारण को शुद्ध करवाएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से इन बिंदुओं पर चर्चा करें–

- मीठे बोल हमें क्यों बोलने चाहिए?
- कौन-कौन अपने भाई-बहनों से कड़वा बोलकर लड़ते हैं?
- उन्हें मीठा बोलना अच्छा लगता है या नहीं?